लर्निंग कॉर्नर और फॉलो-अप गतिविधियाँ

दासन्ना मारेड्डी और वी. कोटेश्वर राव

छोटे बच्चे सक्रिय खोज, खेल और सामाजिक सम्पर्क के माध्यम से सीखते हैं। सीखने की प्रक्रिया में जागरूकता, खोज, पूछताछ और नए ज्ञान का उपयोग शामिल होता है।

बच्चे के सीखने के चरण होते हैं :

- सरल से जटिल : बच्चे बुनियादी बातों से शुरू करके और अधिक जटिल तकनीकों में पारंगत होने की ओर बढ़ते हैं।
- ज्ञात से अज्ञात/ परिचित से अपरिचित : बच्चे भाषा और अपनी परिचित दुनिया का पूर्व ज्ञान लेकर आते हैं; वे अपने पिछले ज्ञान की बुनियाद पर आगे बढ़ते हैं।
- मूर्त से अमूर्त : बच्चे मूर्त वस्तुओं के साथ सबसे अच्छा सीखते हैं जिन्हें वे छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं, उनमें हेर-फेर कर सकते हैं और बाद में इसे अमूर्त से जोड़ सकते हैं, जिसके लिए उन्हें अपनी कल्पना का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।

लर्निंग कॉर्नर

प्रारम्भिक बचपन की कक्षा में, बच्चे विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं, नई अवधारणाएँ सीखते हैं और अपने कौशलों को निखारते हैं। छोटे बच्चों के लिए सर्वोत्तम तरीक़े से सीखने की सुविधा प्रदान करने के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक योजना बनाकर बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करें कि वे अपने सीखने को मज़बूत कर सकें। लर्निंग कॉर्नर में खेलना एक ऐसी सुदृढ़ीकरण गतिविधि है जहाँ बच्चों को उन अवधारणाओं की जाँच-पड़ताल करने, मूल्यांकन करने और उन्हें सुदृढ़ करने के अवसर मिलते हैं जिन्हें वे शिक्षक के नेतृत्व वाली गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं।

लर्निंग कॉर्नर, जिन्हें लर्निंग सेंटर भी कहा जाता है, एक ऐसी प्रणाली है जो कक्षा में खेल सामग्री की उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था और संगठन की सुविधा देती है। बच्चों को खोज करने, चीज़ें बनाने, प्रयोग करने और अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने के अवसर मिलते हैं। प्रत्येक लर्निंग कॉर्नर का एक अलग फोकस होता है और यह बच्चों को अलग-अलग तरीक़े से इसमें भाग लेने की सुविधा देता है। तेलंगाना के आँगनवाड़ी केन्द्रों में, शिक्षकों को चार लर्निंग कॉर्नर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

नाटकीय खेल कोना

दृश्य : बच्चे आँगनवाड़ी के नाटकीय खेल कोने में रखे डॉक्टर सेट के साथ खेल रहे हैं।

बच्चा-1 : मैं अब डॉक्टर बनना चाहता हूँ। (यह बच्चा जो सहायक/ नर्स की भूमिका निभा रहा था, डॉक्टर की भूमिका निभाना चाहता है।)

बच्चा-2 : तुम बाद में डॉक्टर बन सकते हो, अभी मुझे डॉक्टर बने रहने दो। (वह बच्चा जो डॉक्टर बना हुआ था, डॉक्टर बना रहना चाहता है।)

बच्चा-1 : मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ। (पहला बच्चा ज़ोर देता है।)

बच्चा-2 : मुझे दो बार डॉक्टर बनने दो। (बच्चा दो उँगलियाँ उठाता है।)

इस बच्चे ने दो बार डॉक्टर की भूमिका निभाई और फिर दूसरे बच्चे को डॉक्टर बनने का मौक़ा दिया।

उपर्युक्त शब्दचित्र में, भूमिकाओं के आदान-प्रदान के सम्बन्ध में दो बच्चों के बीच स्पष्ट बातचीत हुई। दूसरे बच्चे ने बातचीत के दौरान 'दो' संख्या की अवधारणा को लागू किया।

बच्चों में नाटकीय खेल का विचार उनकी सामाजिक भूमिकाओं और वास्तविक दुनिया की घटनाओं की समझ से प्रेरित होता है। बच्चे अपने घरों से शुरू करके वास्तविक जीवन के अनुभवों को दोहराते हैं। इसलिए, 'मम्मी' और 'डैडी' होने का दिखावा करने के लिए उपकरण और सामग्रियाँ शामिल की जाने वाली पहली चीज़ों में से हैं। शिक्षक दिखावे के खेल को सुविधाजनक बनाने के लिए अलग-अलग वस्तुएँ (प्रॉप) बनाते हैं, जैसे कि डॉक्टर, किराना विक्रेता और फायर फाइटर द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ, जिन्हें बच्चों के बीच उनकी रुचि के अनुसार घुमाया जा सकता है। किसी नाटक में भूमिका निभाते समय, शिक्षक बच्चों को ख़ुद को

चित्र-1 : *एक आँगनवाड़ी में नाटकीय खेल कोना।*

उस क़िरदार के स्थान पर रखने देते हैं जिसे वे निभा रहे होते हैं और उन भावनाओं को सामने लाते हैं जो वह क़िरदार महसूस कर सकता है। इन विभिन्न भूमिकाओं का अनुकरण करने से बच्चों को रिश्तों, लोगों की विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में अपनी समझ को मज़बूत करने का मौक़ा मिलता है। यह बच्चों को अन्य बच्चों के साथ खेलकर अपने सामाजिक कौशलों को हासिल करने और उनका अभ्यास करने के अवसर भी प्रदान करता है।

ब्लॉक कोने

ब्लॉकों के साथ खेलने से बच्चों को रचनात्मक और कल्पनाशील खेल खेलने और समस्याओं को हल करने के अवसर मिलते हैं। ब्लॉकों के साथ खेलकर, बच्चे आकृतियों, आकारों और रंगों के बारे में सीखते हैं। वे ब्लॉकों की तुलना कर सकते हैं, उन्हें व्यवस्थित कर सकते हैं या विस्तृत संरचनाएँ और मॉडल बना सकते हैं। ब्लॉक बच्चों को रचनात्मक तरीक़े से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि वे विभिन्न प्रकार की संरचनाएँ बनाते हैं। इसके अलावा, कभी-कभी बच्चे सहयोगात्मक रूप से कोई संरचना बनाते हैं, जिसके लिए उन्हें एक-दूसरे के साथ संवाद करने और एक टीम के रूप में काम करने की आवश्यकता पड़ती है। पहेलियाँ (जैसे कि प्री-स्कूली बच्चों के लिए लकड़ी की खूँटियाँ और जिग्सॉ पहेलियाँ) बच्चों को खोजने, सोचने, याद करने और उन्हें हल करने के विभिन्न तरीक़ों के साथ प्रयोग करने में सक्षम बनाती हैं। यह कोना वस्तुओं के मिलान, छँटाई, तुलना, अनुक्रम और वस्तुओं में नमूना निर्माण करने जैसी गतिविधियों के लिए अवसर भी प्रदान करता है।

भाषा और साक्षरता कोना

इस कोने (जिसे लाइब्रेरी कॉर्नर के नाम से भी जाना जाता

चित्र-2 : *लायब्रेरी कार्नर।*

चित्र-3 : *रचनात्मक कोने में गतिविधियों में संलग्न बच्चे।*

है) का उद्देश्य पढ़ने से पहले के कौशलों को बढ़ावा देना और बच्चों को छपे हुए शब्दों से अवगत कराना है। तो इस कोने में सामग्री छपी हुई सामग्री है : चित्र कार्ड, वार्तालाप चार्ट और किताबें। इससे बच्चों को विभिन्न प्रकार की छपी हुई सामग्री की पड़ताल करने का मौक़ा मिलता है, जिससे कहानियाँ बनाने के लिए उनकी कल्पना का विस्तार होता है और अनुमान लगाने के उनके कौशलों में निखार आता है। इस स्तर पर फंतासी और जानवरों की कहानियों वाली किताबों की छानबीन करने से उन्हें बेहद ख़ुशी मिलती है। इस अवसर का विस्तार करने के लिए, कोई कहानी सुनाने या बच्चों के साथ मार्गदर्शित बातचीत करने के बाद, शिक्षक भाषा कोने में उस कहानी को या चित्र पुस्तकों/ फ्लैशकार्डों को रख सकते हैं और बच्चों को उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। इससे बच्चों को उसी किताब की पड़ताल करने और कहानी को अपने शब्दों में बताने का प्रयास करने में मदद मिल सकती है। कुछ बच्चे किताब देखकर किसी कहानी को याद करने की कोशिश करते हैं। यह बच्चों को किताबों को 'सम्हालना' और उनका इस्तेमाल सिखाने का भी एक अच्छा तरीक़ा है। जैसे कि किताब के आगे का हिस्सा कौन-सा है और पीछे का कौन-सा, पढ़ते समय पन्ने पलटने की दिशा आदि। यह इसलिए भी क़ीमती है क्योंकि यह दिखाता है कि हम जो बोलते हैं उसे लिखने के माध्यम से कैसे दर्शाया जा सकता है, जो एक ऐसा कौशल है जिसे बच्चे बाद में सीखेंगे।

रचनात्मक कोना

इस कोने में, बच्चों को रंग, काग़ज़, ब्रश, क्रेयॉन आदि वस्तुओं का उपयोग करके अपनी रचनात्मकता को विकसित करने के अवसर मिलते हैं। इस गतिविधि में शामिल होने के दौरान, बच्चों को कई आकर्षक रंगों के साथ काम करने का अवसर मिलता है जो रचनात्मक गतिविधियों में उनकी रुचि पैदा कर सकते हैं। बच्चे अपने सूक्ष्म पेशीय कौशलों पर भी नियंत्रण प्राप्त करते हैं और इस कोने में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं का उपयोग करके, वे अपने विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। यह कोना रचनात्मक सोच, आत्म-अभिव्यक्ति, प्रतिनिधित्व और सूक्ष्म पेशीय क्षमताओं को मज़बूत करता है।

शिक्षक की भूमिका

इन लर्निंग कॉर्नर का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जाता है, इसमें शिक्षक की बहुत सक्रिय भूमिका होती है। उन्हें सम्बन्धित विषयवस्तु और तय की गई गतिविधियों के लिए प्रासंगिक वस्तुओं को रखकर अपनी शिक्षण योजनाओं के आधार पर लर्निंग कॉर्नर की व्यवस्था करनी चाहिए। शिक्षक द्वारा प्रारम्भिक संलग्नता के बाद, बच्चे उस समय अलग-अलग लर्निंग कॉर्नर के माध्यम से अपना सीखना जारी रखते हैं और उसे सुदृढ़ करते हैं जब बच्चों को वहाँ 'खेलने' के लिए कहा जाता है। शिक्षक यह भी कर सकते हैं :

- बच्चों को अपने साथियों के साथ-साथ शिक्षक के साथ भी विचारों और अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- खुले प्रश्न (जिनके लिए हाँ या न में उत्तर से अधिक की आवश्यकता होती है) पूछकर और बच्चों के अनुभवों का सहारा लेकर बच्चों को बातचीत में शामिल करें।
- नए विचारों और वस्तुओं को प्रस्तुत करके बच्चों के सीखने का विस्तार करें।

- अन्य बच्चों के साथ सहयोगात्मक ढंग से खेलकर समाज के लिए मददगार और स्वीकार्य व्यवहार का नमूना पेश करें।
- बच्चों के समस्या-समाधान प्रयासों में सहयोग करें।
- बच्चों के कौशल, विकास और रुचियों का अवलोकन करें।
- योजना बनाने और दस्तावेज़ीकरण में उपयोग के लिए अवलोकनों को रिकॉर्ड करें।
- अगले दिन या सप्ताह की योजना बनाते समय इन अवलोकनों के आधार पर जानकारीपूर्ण निर्णय लें।

फॉलो-अप गतिविधियाँ

बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से जो सीख मिलती है, उसे सुदृढ़ करने के लिए फॉलो-अप गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, बातचीत, कहानी या प्रकृति की सैर के बाद, शिक्षक बच्चों को उनके द्वारा सीखी गई अवधारणाओं का विस्तार करने, उन्हें पुनः प्रस्तुत करने और लागू करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

बातचीत के बाद

एक बार जब शिक्षक बच्चों के साथ कोई बातचीत पूरी कर लेते हैं, तो वे बच्चों के लिए उन चित्र कार्डों, किताबों, चार्टों और अन्य वास्तविक वस्तुओं की पड़ताल करने के अवसर पैदा कर सकते हैं जिनका उन्होंने उपयोग किया है, जिससे बच्चों को अपनी समझ को चर्चा में लाने और अपने अनुभवों को साझा करने का मौक़ा मिलता है। यह उनकी समझ को सुदृढ़ करने में उपयोगी होता है।

राइम सत्र के बाद

भंगिमाओं के साथ कविता गाने के साथ-साथ, शिक्षक कविता पोस्टर को भावों और स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकते हैं। इससे बच्चों को मौखिक भाषा को लिखित सामग्री से जोड़ना और उसे पोस्टर के चित्रों से जोड़ना सीखने में मदद मिलती है। इससे उनकी समझ भी मज़बूत होती है।

कहानी सुनाने के सत्र के बाद

कहानी सुनाने के सत्र के बाद, शिक्षक बच्चों से ब्लैकबोर्ड पर कहानी के पात्रों के चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। बच्चे चित्रों में पात्रों को निरूपित करने और कहानी को याद करने के साथ-ही-साथ उस कहानी को अपने शब्दों में सुनाने की भी कोशिश कर सकते हैं, जो सीखने को मज़बूत करने का एक और तरीक़ा है।

प्रकृति की सैर के बाद

प्रकृति की सैर के बाद, बच्चों ने जो भी देखा, उनसे उसका चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। वे सैर के दौरान एकत्र की गई वस्तुओं से विभिन्न पैटर्न और डिज़ाइन भी बना सकते हैं।

जैसा कि शुरुआत में बताया गया है, बच्चों की सीखने की प्रक्रियाओं में जागरूकता, खोज, पूछताछ और उपयोग (नए सीखे गए ज्ञान/ अवधारणाओं का) शामिल होता है। बच्चों को शिक्षक के नेतृत्व में की गई संरचित गतिविधियों के माध्यम से मिलने वाली सीख का विश्लेषण करने, मूल्यांकन करने, उसे लागू करने और मज़बूत करने के लिए पर्याप्त समय और अवसर मिलने की आवश्यकता होती है।

दासन्ना मारेड्डी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के नारायणखेड़ ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में ब्लॉक समन्वयक हैं। उन्हें प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) के विभिन्न हितधारकों के सीखने के अनुभवों को सुविधाजनक बनाने में आनन्द आता है और छोटे बच्चों के साथ काम करना बहुत पसन्द है। वे एक इंजीनियरिंग स्नातक हैं। शिक्षा में अपने जुनून को आगे बढ़ाने से पहले, वे इंफोसिस के साथ आईटी में काम करते थे। उनसे *Dashanna.mareddy@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

वी. कोटेश्वर राव तेलंगाना के ज़हीराबाद ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में ब्लॉक समन्वयक हैं। उन्होंने पहले आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी ज़िले में एपी स्कूल चॉइस स्टडी के समन्वयक और संगारेड्डी ईसीई पहल के हिस्से के रूप में काम किया है। उनके पास उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से समाज कार्य में मास्टर डिग्री और इग्नू से ईसीसीई में डिप्लोमा है। उनसे *koteswar.rao@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अनुज उपाध्याय **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी